www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर्त्तव्यपरायणता
मानव जीवन की आधार शिला

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

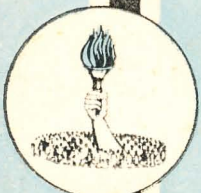

युग-निर्माण योजना
मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आकाश में अधर लटके हुए ग्रह-नक्षत्र एक दूसरे की आकर्षण शक्ति के बल पर खिचे हुए टँग रहे हैं। यदि यह शिथिल हो जायें तो अन्तरिक्ष के शोभायमान यह सितारे अपनी कक्षा से च्युत होकर किसी दूसरे ग्रह से जा टकरायें या अनन्त आकाश की किसी दिशा में डूबकर विलीन हो जायें। इन्हें अतीत काल से यथास्थान स्थिर रखने वाली और निर्धारित क्रिया प्रणाली में नियोजित किये रहने वाली शक्ति एक ही है—'ग्रहों की पारस्परिक आकर्षण क्षमता'। इसके बिना किसी नक्षत्र का अस्तित्व एवं क्रिया कलाप एक क्षण भी स्थिर नहीं रह सकता।

मनुष्य जीवन की स्थिरता एवं प्रगति की आधार शिला है, उसकी कर्तव्य परायणता। यदि हम अपनी जिम्मेदारियों को छोड़ दें और निर्धारित कर्तव्य की उपेक्षा करें तो फिर ऐसा गतिरोध उत्पन्न हो जाय कि प्रगति एवं उपलब्धियों की बात तो दूर मनुष्य की तरह जीवनयापन कर सकना भी सम्भव न रहे।

जीवन की हर विभूति कर्त्तव्य परायणता पर निर्भर है। हर उपलब्धि की स्थिरता एवं सुरक्षा कर्तव्य निष्ठा पर ही निर्भर है। हमें बहुमूल्य शरीर मिला है उसे निरोग, परिपुष्ट एवं दीर्घजीवी बनाया जा सकता है यदि शौच, स्नान, स्वच्छता, कठोर श्रम, समय का पालन, आहार की सुव्यवस्था, इन्द्रिय संयम विश्राम आदि की जिम्मेदारियों को ठीक तरह निबाहा जाय। मन की प्रखरता एवं समर्थता इस बात पर निर्भर है कि चिन्ता, शोक, निराशा, भय, क्रोध, आवेश आदि से उसे बचाये रखने और उत्साह, उल्लास, धैर्य, साहस, सन्तोष, विश्वास, सन्तुलन, स्थिरता, एकाग्रता जैसे सद्गुणों से सुसज्जित रखा जाय। यदि मन को वैसे ही जंगली घास फूस और झाड़-झंखाड़ की तरह चाहे जिस दिशा में बढ़ने दिया जाय तो वह आप ही आप अपने लिये सबसे बड़ा शत्रु सिद्ध होगा। मन को साधने और सुसंस्कृत बनाने की जिम्मेदारी उस प्रत्येक व्यक्ति की है, जिसे मानसिक क्षमता का वरदान मिला है।

परिवार में जीवन में बहुधा और सुख सुव्यवस्था रहती है। पर वे उपलब्धियाँ केवल उन्हीं को प्राप्त होती हैं, जो परिवार के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हर गृहस्थ के साथ अपनी जिम्मेदारियों को पूरी तत्परता, सावधानी और ईमानदारी के साथ निवाहते हैं। स्त्री केवल सेवा के लिये नहीं मिली है। उसके विकास, सुविधा, सन्तोष एवं स्वास्थ्य की हर आवश्यकता को पूरा करना भी कर्तव्य है। गाय उसी को दूध देगी, जो भरपेट चारा खिलायेगा। दाम्पत्य जीवन का आनन्द उसे मिलेगा जो अपना परिपूर्ण कर्तव्य पालन करते हुए पत्नी का हृदय जीत लेगा। बच्चे उसी के सुसंस्कृत और सुविकसित होंगे जो उन्हें प्यार, समय और सहयोग देकर विकासोन्मुख एवं सुसंस्कृत बनाने को निरन्तर तत्पर रहेगा। माता-पिता एवं गुरुजनों का वात्सल्य एवं आशीर्वाद उसे मिलेगा, जो उनकी सुविधा तथा इज्जत में कमी न आने देने का शक्ति भर प्रयत्न करेगा। भाई और बहिनों का अनन्त प्रेम और सहकार पाने की आशा उन्हें ही करनी चाहिये जो उनके लिये जान देगा और भरपूर प्यार करेगा। परिवार का आनन्द केवल कर्त्तव्यपरायण ही लेते हैं। इसके विपरीत जिन्होंने सुविधायें पाने का अधिकार तो जाना पर कर्त्तव्य पालन की शर्त भूल गये, उनके लिये घर और नरक में कोई अन्तर नहीं रहेगा। मनोमालिन्य और कलह से घर का वातावरण विषाक्त बना रहेगा। न पत्नी जीवन संगिनी बनकर रहेगी, न बच्चे आज्ञानुवर्ती होंगे। माता-पिता का असन्तोष और भाई-बहिनों का द्वेष घर को मरघट बनाये रहेंगे। परिवार स्वर्ग उनके लिये है, जो घर वालों से बड़ी आशायें रखते हैं, पर अपनी जिम्मेदारियों की ओर से आँखें मूँदे बैठे हैं।

धन सबको अच्छा लगता है उसे पाना और बढ़ाना सभी चाहते हैं पर कठोर श्रम, सतर्क जागरूकता, क्रमबद्ध सुव्यवस्था, हिसाब की स्वच्छता और मिलनसारी, ईमानदारी के गुण जिनमें हैं, उचित रीति से स्थिर सम्पदा वे ही कमा सकते हैं. उपार्जन और पुरुषार्थ प्रतिभा पर निर्भर है। इन दोनों गुणों को बढ़ाते रहने की जिम्मेदारी जिसने समझी और उसके लिये सतत् प्रयत्न किया वह सम्पन्नता का अधिकारी बना। जिसने मितव्ययता, बजट, हिसाब, धूर्तों से सतर्कता, सुरक्षा की सामर्थ्य, सदुपयोग की योजना बनाकर पैसा खर्च किया, वह यशस्वी हुआ और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कमाने की तरह खर्च का आनन्द लेने का सौभाग्य भी प्राप्त किया। धन आकाश से नहीं बरसता और न जमीन में से निकलता है। चोरी-चांडाली से जो धन आता है, वह हाथ-पाँव चला कर बारूद की तरह भक्क से उड़ जाता है। उसमें किसी को न शान्ति मिलती है, न आनन्द आता है। सम्पदा और सम्पत्ति के उपार्जन एवं उपयोग के साथ अनेक उत्तरादायित्व जुड़े हुए हैं, जो उन्हें निबाहना जानता है, उसी को सार्थक सम्पन्नता का लाभ मिलता है।

गैर जिम्मेदार, लापरवाह और अपने कर्त्तव्यों की उपेक्षा करने वाले अपना और सम्बन्धित व्यक्तियों का केवल अहित ही करते हैं। कर्मचारी जो निरन्तर अपनी जिम्मेदारियों की उपेक्षा किया करता है, मालिक के लिये केवल घाटा ही दे सकता है और दुत्कार का भाजन ही बन सकता है। चोर, चालाक होते हुए भी तत्पर व्यक्ति लाभदायक रहता है, किन्तु ईमानदार और भला व्यक्ति होते हुए भी लापरवाही और गैर जिम्मेदारी का व्यवहार करने वाला अधिक हानिकारक सिद्ध होता है। बेईमान नौकर भी मालिक की हानि करते हैं पर गैर जिम्मेदार तो जहाँ रहेंगे वहां का पटटाढार करके रहेंगे।

महत्वपूर्ण कार्य सदा उन्हीं के द्वारा सम्पन्न होते हैं, जो कर्त्तव्य पालन को प्राणों से भी अधिक प्यार करते हैं। सैनिक का सबसे बड़ा गुण अनुशासन और अपने महान् उत्तरदायित्व का शानदार ढङ्ग से निर्वाह कर देना ही तो है। सन्त, ब्राह्मण, पुरोहित, नेता और प्रवचनकर्त्ता अपनी जिम्मेदारियों के प्रति निष्ठावान् रहें तो मानव जाति का हित साधन कर सकते हैं।

शासनतन्त्र की गैर जिम्मेदारी ने इस देश को कितनी क्षति पहुँचाई है, इसका लेखा-जोखा लिया जाय तो वह अकाल, बाढ़, भूकम्प एवं दैवी प्रकोप से उत्पन्न होने वाली समस्त क्षति की अपेक्षा कई गुना संकट उत्पन्न करने वाली सिद्ध होगी। लाल फीताशाही, रिश्वत, कामचोरी, बेगार भुगतने और टालने की वृत्ति आदि दोषों ने शासनतन्त्र को लुंज-पुंज करके रख दिया है। इस गैर जिम्मेदारी ने अराजकता से भी बढ़कर क्षति पहुँचाई है। यदि हमारे शासकीय कार्यकर्त्ता अपने-अपने कर्त्तव्यों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का पूरी ईमानदारी और जिम्मेदारी से संलग्न करें तो देश का काया-कल्प होने में देर न लगे ।

समाज का सदस्य—राष्ट्र का नागरिक होना भी मानवीय उत्तरदायित्वों से लदा हुआ है, अपनी सुविधा भी उसी सीमा तक चाहें जिससे दूसरों की सुविधा में व्यवधान उत्पन्न न हो यह हर किसी की नैतिक जिम्मेदारियां हैं । सड़कों पर केले और नारङ्गी के छिलके फेंककर हम दूसरों को फिसल कर गिरने की कठिनाई उत्पन्न करते हैं । बाँई ओर चलने की अपेक्षा सारी सड़क को घेरकर चलना, सड़क और गलियों में यों ही घर का कूड़ा फेंक देना, बच्चों का नालियों पर टट्टी कराना, बहुत रात गये तक लाउडस्पीकर चलाना, सार्वजनिक स्थानों को घेरकर बैठ जाना या गन्दा करना, नियत समय पर वचन का पालन न करना आदि ऐसी बातें हैं जो देखने में छोटी लगती हैं पर इन्हीं से पारस्परिक सद्व्यवहारों में भारी क्षति पहुँचती है । सभ्य समाज का हर नागरिक अपनी जिम्मेदारी को समझता है और नैतिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जिम्मेदारियों के प्रति सजग रहकर अपना और अपने देश की प्रतिष्ठा बढ़ाता है ।

अपने समाज के प्रति हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है । हम समाज के एक सदस्य हैं । समाज का वातावरण हमें अतिशय प्रभावित करता है । वैयक्तिक और सामूहिक प्रगति का द्वार तब खुलता है, जब लोग अपने शरीर और परिवार की तरह सामाजिक सुव्यवस्था और उत्कर्ष का समुचित ध्यान रखें और उसके लिये कष्ट सहने और त्याग करने को तैयार रहें । सामूहिक उत्कर्ष में जो जितनी रुचि लेता है और लोक मङ्गल के लिये जो जितना त्याग प्रस्तुत करता है वह उतना ही बड़ा महामानव गिना जाता है ।

आत्मा के प्रति हमारी जिम्मेदारी है, ईश्वर के प्रति भी । उन्हीं के कारण हमारा अस्तित्व है । आवश्यक है कि हम आत्मा की आवाज सुनें और परमात्मा द्वारा निर्धारित कर्त्तव्यों का पालन करते हुए मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए प्रयत्नशील रहें ।

'—जो करें मन लगा कर करें' पुस्तिका से ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर्तव्य पालन का आदर्श बहुत ऊँचा है।

—प्रेमचन्द

मनुष्य जब तक अपने मनुष्योचित कर्तव्य को पूरा नहीं कर लेता तब तक वह नारकीय यातनाओं से मुक्ति नहीं पा सकता।

★

कर्तव्य पालन का अपना एक आनन्द है जिसे पृथ्वी, सूर्य, ग्रह, नक्षत्रादि भोग रहे हैं, तो फिर सचेतन यन्त्र—मनुष्य ! तू भी अपने नियत कर्म का आनन्द उठा।

—योगिराज अरविन्द

जो कार्य आपके सामने है उसे तत्काल एवं निष्कपट भाव से करना आपका कर्तव्य है—यही आजके अधिकार की पूर्ति है।

—गेटे

हमारा कर्तव्य है कि सिर्फ मामूली सा काय-क्लेश करके सत्य साधना की सम्भावना हम कदापि न करें; किन्तु उसके मूल तत्व को समझ कर पाप दूर करने का अन्तरात्मा से व्रत ग्रहण करें।

—रवीन्द्र नाथ ठाकुर

ईश्वर क्या चाहता है ? यह जानने का प्रयास करना और उसकी इच्छानुसार चलना मनुष्य का परम कर्तव्य है।

—टालस्टाय

युग निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org